eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर के काव्य पर सिद्धनाथ सम्प्रदाय की वैचारिकता का प्रभाव

[1]डॉ. वर्षा रानी

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुसाफिरखाना, अमेठी।

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

कबीर के काव्य में रहस्यवाद के तत्वों के विवेचन में योग साधना, उलटवासियों, ब्रह्मचिंतन, सहस्रार आदि शब्दों की योजना और अभिव्यंजना यह सिद्ध करती है कि उनके काव्य चिंतन पर पूर्ववर्ती सिद्ध–नाथ सम्प्रदाय के विचारों का स्पष्ट प्रभाव है। प्रस्तुत शोध पत्र में नाथ और सिद्ध सम्प्रदाय की मान्यताओं का कबीर की वाणी में परिलक्षित प्रभाव का विवेचन किया गया है।

रामकुमार वर्मा के अनुसार 'सिद्ध साहित्य, नाथ पंथ और संत मत की ही विचारधारा की तीन परिस्थितियां हैं। इन दोनों का अत्यधिक प्रभाव कबीर पर पड़ा' कबीर ने जिस योग साधना, षट्चक्र, इड़ा–पिंगला–सुषुम्ना का वर्णन कर साधना का रूप बताया है, वह सिद्धों और नाथों द्वारा अनुमोदित है। कबीर तक आते आते कुछ पारिभाषिक शब्द अलग रूपों में ग्रहण किये गये किन्तु कबीर ने योग साधना का वही रूप ग्रहण किया जो सिद्धों और नाथों ने दिया। मुख्य रूप से हठयोग साधना, यौगिक क्रियाओं से शारीरिक और मानसिक नियंत्रण, सात चक्र, नाड़ी संधान आदि से ब्रह्म रंध्र की प्राप्ति, ईश्वर की अपने ही शरीर में स्थिति का विचार जैसे रहस्यवादी विचारों की व्याप्ति कबीर पर नाथ पंथ के व्यापक प्रभाव को प्रमाणित करता है। इसके अतिरिक्त कबीर के सामाजिक विचारों पर भी सिद्ध नाथ योगियों का प्रभाव है। जैसे– बाह्याडंबरों का विरोध, जाति पाति का खंडन, बाह्याचारों का विरोध आदि–

सिद्धों का मानना है–

'आवण गमण गां नेन विषैन्यों,
तो वि निगज्ज भणइं हउ पंडिओ।
कबीर भी कहते हैं–
'जो तू बामण बामणी जाया, आन बाठ हु, क्यों नहीं आया।'

नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक गोरखनाथ की वाणी और कबीर की वाणी में भाषान्तर से अनेक वैचारिक समानताएं दिखाई देती हैं। जैसे गोरखनाथ ने पुस्तकीय ज्ञान का खंडन करते हुए पुस्तकीय ज्ञान रखने वाले को भारवाही गर्दभ कहा है (गोरख सिद्धांत संग्रह) ठीक उसी प्रकार कबीर ने भी कहा –'पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।'

अनेक विद्वानों ने कबीर पर बौद्ध मत के वज्रयान और सहजयान धारा के सिद्धों और सिद्धों की सुसंस्कृत धारा मानी जाने वाली नाथ परंपरा का प्रभाव माना है । इसी क्रम में उन्हें नाथ सम्प्रदाय की विचारधारा को विकसित और परिष्कृत करने वाले संत कवि के रूप में भी देखा जाता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

मुख्य बिंदु – सिद्ध संप्रदाय, नाथ संप्रदाय गुरु की महत्ता, बाह्य आडंबरों का विरोध, जाति पाति का खंडन, हठयोग साधना, रहस्यवाद, सबद।

Introduction

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कबीर के चिंतन के विविध आयामों में सिद्धों और नाथों की साहित्य परंपरा के वैचारिक प्रभाव का विवेचन करना है। कबीर की विचारधारा में हिंदू मुस्लिम सिद्ध और नाथ सम्प्रदाय की रहस्यवादी परंपरा से विकसित निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना को साहित्य में संत काव्य धारा के रूप में विकास का विश्लेषण किया जाना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

शोध साहित्य की समीक्षा– कबीर की वैचारिकता पर सिद्धों और नाथों के प्रभाव को सभी विद्वान आलोचकों ने संस्तुति दी है। कबीर के व्यक्तित्व, साहित्य और दार्शनिक विचारों की आलोचना करने वाले सर्वप्रथम आलोचक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने आलोचना ग्रंथ कबीर में उनके विचारों के विविध आयामों पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। कबीर के चिंतन पर विभिन्न पूर्ववर्ती पंथों की दार्शनिक विचारधाराओं के प्रभाव को रेखांकित करते हुए द्विवेदी जी ने लिखा है–

'कबीर धर्मगुरु थे। इसलिए उनकी वाणियों का आध्यात्मिक रस ही आस्वाद्य होना चाहिए, परंतु विद्वानों ने नाना रूप में उन वाणियों का अध्ययन और उपयोग किया है। काव्य–रूप में उसे आस्वादन करने की प्रथा ही चल पड़ी है, समाज–सुधारक के रूप में, सर्वधर्म–समन्वयकारी के रूप में, हिंदू मुस्लिम ऐक्य–विधायक के रूप में, विशेष संप्रदाय के प्रतिष्ठाता के रूप में और वेदांत–व्याख्याता दार्शनिक के रूप में भी उनकी चर्चा कम नहीं हुई है। यों तो 'हरि अनंत हरि कथा अनंता, विविध भाँति गावहिं श्रुति–संता' के अनुसार कबीर–कथित हरि–कथा का विविध रूपों में उपयोग होना स्वाभाविक ही है, पर कभी–कभी उत्साह–परायण विद्वान् गलती से कबीर को इन्हीं रूपों में किसी एक का प्रतिनिधि समझकर ऐसी–ऐसी बातें करने लगते हैं जो असंगत कही जा सकती हैं।''

उपरोक्त कथन में द्विवेदी जी ने कबीर पर किसी एक पंथ विशेष के प्रभाव को नकारा है और उन्हें समन्वयवादी कवि के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

कबीर काव्य के सामाजिक सरोकार के साथ ही उसके स्वरूप, दार्शनिक आधार और उसकी साहित्यिक विशेषताओं को रेखांकित करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में कबीर काव्य पर अद्वैतवाद, सूफीवाद, सिद्ध–नाथ आदि विचारधारा के प्रभाव को रेखांकित करते हुए लिखा है कि "सारांश यह कि जो ब्रह्म हिन्दुओं की विचारपद्धति में ज्ञान मार्ग का एक निरूपण था उसी को कबीर ने सूफियों के ढर्रे पर उपासना का ही विषय नहीं, प्रेम का भी विषय बनाया और उसकी प्राप्ति के लिए हठयोगियों की साधना का समर्थन किया। इस प्रकार उन्होंने भारतीय ब्रह्मवाद के साथ सूफियों के भावात्मक रहस्यवाद, हठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद और वैष्णवों के अहिंसावाद तथा प्रपत्तिवाद का मेल करके अपना पन्थ खड़ा किया। उनकी बानी में ये सब अवयव स्पष्ट लक्षित होते हैं।"

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

प्रगतिशील आलोचक गजानन माधव मुक्तिबोध ने अपने आलोचना ग्रंथ 'मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का एक पहलू' में कबीर को प्रगतिशील चेतना के कवि के रूप में स्थापित किया है। उनके अनुसार– "राम के चरित्र द्वारा और तुलसीदासजी के आदर्शों द्वारा सदाचार का रास्ता भी मिला। किन्तु वह मार्ग कबीर के और अन्य निर्गुणवादियों के सदाचार का जनवादी रास्ता नहीं था। सच्चाई और ईमानदारी, प्रेम और सहानुभूति से ज्यादा बड़ा तकाजा था सामाजिक रीतियों का पालन।" परवर्ती आलोचकों ने कबीर के सामाजिक विचारों को जनवादी, क्रांतिकारी और प्रगतिशील कहा है। सिद्ध नाथ सम्प्रदाय के वैचारिक मूल में भी सामाजिक बाह्याचारों का खण्डन है, जिसकी प्रतिध्वनि कबीर की वाणी में सुनाई देती है।

इस दृष्टि से डॉ. धर्मवीर की कबीर सम्बन्धी पुस्तक 'कबीर के आलोचक' उल्लेखनीय हैं। धर्मवीर मानते हैं, "मेरी खोज है कि ब्राह्मणों ने और ब्राह्मणों के शिष्यत्व में ब्राह्मणेतर द्विज आलोचकों ने कबीर को उनकी दलित जुलाहे जाति से और कबीरपन्थ को काटकर अपने वैदिक घर के बाहर पिंजड़े में सगुण का रामनाम जपने वाला तोताराम बना दिया है। यूँ, मेरे द्वारा अब तक के किए गए कबीर के अध्ययन के निम्नलिखित 3 परिणाम निकलते हैं–

1.यह नहीं माना जा सकता कि कबीर को लेकर ब्राह्मणों के चिन्तन में कोई सुधार या बदलाव सम्भव है, क्योंकि उनकी दृष्टि पिछले तीन हजार सालों से पूरी, परिपक्व और एक–सी है।

2.ब्राह्मणेतर द्विज आलोचक ब्राह्मणों के शिष्यत्व से बाहर आ सकते हैं। वे अपनी बौद्ध, जैन और सिक्ख परम्पराओं से जान–पहचान बढ़ाएँ तो उनकी स्वतन्त्र पहचान बन सकती है।

3.विदेशी विद्वान कबीर को सामाजिक सन्दर्भ देने के अपने शोधकार्य में जुटे हुए ही हैं। (डॉ. धर्मवीर, कबीर के कुछ और आलोचक, वाणी प्रकाशन, 2009, पृ. 8)

प्रस्तावना– कबीर की वाणी में परिलक्षित उनके दार्शनिक विचारों पर पूर्ववर्ती साहित्य परंपरा के प्रभाव को हिंदी के अनेक मूर्धन्य आचार्यों ने विवेचित किया है। कबीर के दार्शनिक विचारों अथवा उनके चिंतन के विविध आयामों को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सर्वप्रथम विस्तार दिया। परवर्ती आलोचकों ने इसी आधार पर कबीर के चिंतन पर भारतीय दर्शन और पूर्ववर्ती सिद्धनाथ साहित्य परंपरा के प्रभाव को रेखांकित करते हुए उन्हें समाज सुधारक के रूप में स्वीकार किया है और उन्हें जनवादी क्रांतिकारी प्रगतिशील विचारों का संत कवि कहा गया।

कबीर की वाणी में जिन विचारों ने उन्हें जनवादी और क्रांतिकारी कवि के रूप में प्रतिष्ठित किया है उनका प्रारंभिक रूप सिद्धों और नाथों के साहित्य में मौजूद है। गोरखनाथ की साधुक्कड़ी भाषा का प्रभाव भी कबीर की वाणी में स्पष्ट परिलक्षित होता है। इन्हीं आधारों पर कबीर के चिंतन में सिद्ध और नाथों के प्रभाव का विवेचन करना अभीष्ट है। सर्वप्रथम सिद्ध और नाथ साहित्य के माध्यम से उनकी वैचारिकता को जानना होगा। संसार की नश्वरता और शारीरिक कष्टों से जीवन्मुक्ति हेतु जिस ब्रह्म की प्राप्ति के लिए अनेक धार्मिक संप्रदायों के मत मतांतरों का जाल भारतीय समाज में फैल रहा था नाथ संप्रदाय की हठयोग साधना और रहस्यवाद उनमें से ही एक है। यद्यपि यौगिक क्रियाओं के माध्यम से श्वास नियंत्रण, मन नियंत्रण, इंद्रिय नियंत्रण तथा शरीर में उपस्थित सप्त

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

चक्रों को पार कर ब्रह्म चक्र अथवा सहस्रार की प्राप्ति आदि को समझ पाना सामान्य मनुष्य के परे था, तथापि धार्मिक रूढ़ियों बाह्याचारों, कर्मकांडों और अंधविश्वास से परिपूर्ण कुरीतियों से दूर हटकर स्व में ही ब्रह्म की प्राप्ति का यह मत समाज के लिए बहूपयोगी था। कबीर ने सिद्धनाथ संप्रदाय के इस मत को बखूबी समझा और लोक भाषा में सामाजिक विषमता को मिटाने के लिए इसका सहज प्रयोग किया। उन्होंने कहा–

'मोको कहां ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना तीरथ में ना मूरत में, ना एकांत निवास में ।
ना मंदिर में, ना मस्जिद में,
ना काबे कैलाश में ।
मैं तो तेरे पास में।'

जिस प्रकार कबीर की भाषा के संबंध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है– ''भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा लिया – बन गया तो सीधे–सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।'' इसी प्रकार कबीर के चिंतन में भी विविध संप्रदायों के मतों का वैचारिक मंथन है और उन्होंने उन मतों का मंथन कर सार तत्व को समय और समाज के अनुरूप अपनी वाणी में पिरोया है।– 'साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय। सार सार को गहि रहे, थोथा देहि उड़ाय।।' का पालन करते हुए विभिन्न संप्रदायों के मूल में छिपे सामाजिक हित के मतों को कबीर ने अपने चिंतन में समाहित किया है।

विषय विस्तार–

कबीर के काव्य में सिद्धनाथ परंपरा के जिन तत्वों का दर्शन मिलता है उनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं–

योग साधना के तत्व– कबीर की वाणी में सिद्ध नाथों द्वारा बताए गए योग साधना के तत्व जैसे इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ियों का शोधन, शरीर के सप्त चक्र में सर्वोच्च सहस्रार और ब्रह्म रंध्र में ईश्वर की उपस्थिति, कुण्डलिनी, उलट बासियां आदि का प्रयोग मिलता है।–

आगि जु लागी नीर महिं, कादौ जरिया झारि।

उत्तर दखिन के पंडिता, मुए विचारि–विचारि।। (उलटबांसी)

अवधूत और अवधू– कबीर की वाणी में नाथ सम्प्रदाय के अवधूत या अवधू शब्द का प्रयोग मिलता है।

'अवधू बेगम देस हमारा।

राजा–रंक–फकीर–बादसा सबसे कहौं पुकारा। जो तुम चाहो परम पद को, बसिहो देस हमारा।।

जो तुम आये झीने होके, तजो मन की भारा। धरन–अकास–गगन कछु नाहीं, नहीं चंद्र नहिं तारा।।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

सत्त–धर्म की हैं महताबें, साहेब के दरबारा। कहैं कबीर सुनो हो प्यारे, सत्त–धर्म है सारा।।'

गोरक्षनाथ की वाणी में भी इसी शैली का प्रयोग मिलता है जहां योगी को अवधू कह कर संबोधित किया गया है।–

अवधू ऐसा ग्यांन बिचारी।

ता मैं झिलमिल होत उजाली।। (श्री गोरखगीत पृष्ठ–38, लक्ष्मी प्रकाशन) ।

सुमिरन का महत्व –

गोरखनाथ की वाणी में इन्द्रियों पर नियंत्रण कर ईश्वर के सुमिरण के महत्व पर बल दिया गया है, यह एक यौगिक क्रिया (साधना) है–

'ऐसा जाप जपौ मन लाई, सोहं सोहं अजपा गाई।।
आसण दिढ करि धरौ धियानं, अहनिसि सुमरौ ब्रह्मगियानं।।
जाग्रत न्यंद्रा सुलप अहारं, काम क्रोध अहंकार निवारं।।
नासा अग्र निज, ज्यौ बाई, इडा प्यंगुला मधि समाई।।
लसैं सहस इकीसौ जाप, अनहद उपजै आपहि आप।।
कबीर भी इन्द्रियों के नियंत्रण और सुमिरन को महत्व देते हैं–
'काह भरोसा देह का,
बिनसी जाय छिन मांहि।
सांस सांस सुमिरन करो
और जतन कछु नाहिं।'
तथा 'कबीर सुमिरन सार है,
और सकल जंजाल।
आदि अंत मधि सोधिया,
दूजा देखा काल।।'

हठयोग– नाथ सम्प्रदाय के हठयोग के तत्वों को भी कबीर ने अपनी वाणी में प्रयुक्त किया है–

'जब लगि त्रिकुटि संधि न जानै, ससिधर के अति सूर न आने।

जब लगि नाभि कंवल नहिं सोधै, तो हीरै हीरा कैसे बंधे।'

गुरु का महत्व–

सिद्ध नाथ सम्प्रदाय में गुरु को विशेष महत्व दिया गया है। साधक बिना गुरु के मार्गदर्शन के साधनावस्था की जटिलता को नहीं भेद सकता। गोरक्षनाथ और उनके गुरु मत्स्येंद्रनाथ की अनेक कथाएं मिलती हैं जिनमें गुरु शिष्य संबंध, गुरु की महिमा, शिष्य का समर्पण भाव, अकूत विश्वास और आस्था को दर्शाया गया है। कबीर ने इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान दे दिया है–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

'गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।'
यही स्वर नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक गोरक्षनाथ की वाणी में भी है–
'चेला सब सूता, नाथ सतगुर जागै।
दसवैं द्वारि अवधू मधुकरी मांगै।।'
'कथंत गोरखनाथ गुरु उपदेसा।
मिल्यां संत जन टल्या अंदेसा।।'

ब्रह्म की अंतःस्थिति–

सिद्ध नाथ ब्रह्म की स्थिति शरीर में ही मानते हैं जिसका शोधन साधना के द्वारा किया जाता है। इसका वर्णन सांसारिक वस्तुओं, सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, आकाश आदि के माध्यम से किया गया है। उनका मानना है कि यह शरीर पंचमहाभूतों से निर्मित है – 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा। पंचतंत्व से बना शरीरा।' यही पंचतत्व सम्पूर्ण भौतिक संसार के भी नियामक हैं। जो मनुष्य इन पंचतत्वों के गुणों को जानकर अपने शरीर की गति और श्वसन प्रक्रिया को नियंत्रित कर लेगा वहीं ब्रह्म का शोधन कर सकेगा । शरीर के सात चक्रों या कुंडलिनियों को जगाकर ही वह ब्रह्म तक पहुंच सकता है। –

'गोरख बोलाइ सुनहु रे अवधू, पंचौं पसर निवारी।
अपनी आत्मा आप विचारो, सोवो पाँव पसारी ।।
ऐसा जप जपो मन लाई, सोहम् सोहम् अजपा गाई।।
आसन दृढ करि धरो ध्यान। अहिनिसि सुमिरौ ब्रह्म गियान।।
नासा आगरा निज ज्यों बइइ द्य इड़ा पिंगला मध्य समय।।
छः सै सहंस इकेसौ जाप। अनहद उपजै आपै आप।।
बैंक नाली में उगै सूर। रोम–रोम धूनी बाजै तोर ।।
उलटै कमल सहस्रदल बास । भ्रमर गुफा में ज्योति प्रकाश ।।
कबीर का सम्पूर्ण सबद इसी रहस्यवादी दर्शन से प्रभावित है। उनके शब्द संयोजन में भी इनका यथावत प्रयोग मिलता है।

निष्कर्ष– कबीर के काव्य में सिद्धो और नाथ योगियों के विचारों का स्पष्ट प्रभाव है। न केवल विचारों अपितु भाव और भाषा का भी प्रचुर प्रभाव दिखाई देता है। कहीं कहीं तो सरहपा और गोरखनाथ के पदों की पुनरावृत्ति सी दिखाई देती है। जैसे–गोरखनाथ कहते हैं 'नाथ बोले अमृत वाणी, बरसेंगी कम्बली भीजेंगा पानी' यह उलटबाँसी कबीर के नाम पर इस रूप में प्रचलित हैं 'कबीर दास की उलटी वाणी, बरसे कम्बल भींजे पानी'। या सरहपा के यहाँ गगन मंडल में जीवात्मा के प्रवेश का व्योरा इस प्रकार है– 'जेहि वन पवन न संचरै, रवि शशि नाहि पवेश। तेहि वन चित्त विसाय करू, सरूहे कहिए उमेश।'

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीरदास जी के नाम पर हल्के शब्द भेद के साथ यही उलटबाँसी इस प्रकार मिलती है– 'जेहि बन सिंह न संचरै, पँखि उडै नहीं जाए। रैन दिवस का गम नहीं, तहाँ कवीरा रहा लौलाए।।'

कबीर दास जी में जाति भेद विरोध पर भी सिद्धो–नाथों का प्रभाव मिलता है। हिन्दूओं और मुसलमानों में बढ़ते हुए झगड़े को देखकर गोरखनाथ के शिष्यों ने घोषित किया कि हिन्दू और मुसलमान दोनों एक की प्रभु की संतान हैं फिर भेद कैसा। कबीर भी कहते हैं

'हिन्दु तुरक का करता एकै, तागति लखि न जाई'

सिद्धो–नाथों ने अपने ग्रंथो में पांडित्य, शास्त्रवाद का मजाक उड़ाया है। कबीर भी इसका विरोध करते हैं। वे कहते है– 'पंडित और मशालची, दोनो सूझे नाहि।

औरन को करे चांदना, आप अंधेरे माहि।।'

नाथ पंथ के सिद्धान्त ग्रंथ में हिन्दू धर्म की रूढ़ियों का व्यंग्यात्मक विरोध है। गंगा स्नान से मोक्ष मिलने के विश्वास पर व्यंग्य करते हुए कण्हपा कहते हैं–

''धर्मो यदि भवेत स्नानात, कैवर्तानाम् कृर्थातता। नक्तंल दिवं प्रविष्टानाम्, मत्यस्यो दीनाकंतु का कथा''

संतो के बीच में इसी तरह का विश्वास प्रचलित है– ''गंगा मे नहाए कहो को नर तरिगे। मछलि न तरि जाको पानी में ही घर है।'

कबीर ने भी व्यंग्य शैली में इन कर्मकांडों का विरोध किया है – 'पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़।' गुरु का महत्व, पंचतत्वों का महत्व भी कबीर के यहां नाथ सिद्धों की ही देन है। इसी प्रकार कबीर द्वारा पंचमकारों का वर्णन भी सिद्धों–नाथों के साहित्य में मौजूद है। पंचमकारों में सबसे अधिक चर्चा मदिरा की की गयी है। कबीर ने भी मदिरा भाव की भट्ठी में ज्ञान रूपी गुड़ और ध्यानरूपी महुए को चुआने संबंधी रचना की है –

'अवघू मेरा मन मतवारा।

उन्मुनि चढा गगन–रस पीवै, त्रिभुवन भया अजियारा।। गुड़करि ज्ञान, ध्यान करि महुआ, पीवै पीवन हारा।'

कबीरदास की साधना पद्धति में जो शब्दावलियाँ प्रयोग की गयी हैं, वे भी सिद्धो–नाथों की भाषा से उठायी गयी है। कबीर ने अपने ब्रह्म को खसम कहा है। अरबी में खसम का अर्थ होता है पति। कबीर के ब्रह्म पुरुष हैं और वे स्वयं को पत्नी भाव से समर्पित करते हैं, इसलिए यह बिल्कुल सही प्रयोग है। कबीर का ब्रह्म, शून्य है इसलिए खसम का अर्थ हुआ शून्य। सिद्धों ने भी इस खसम शब्द का प्रयोग शून्य के अर्थ में किया है ख. सम = शून्य।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कबीर के काव्य पर सिद्ध नाथ सम्प्रदाय के विचारों, भाव और भाषा का बहुविध प्रभाव है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

संदर्भ सूची–

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2002।
2. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष 2002।
3. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2000।
4. सिंह, योगेन्द्र प्रताप, कबीर की कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001।
5. सिंह, वसुदेव, कबीर, अभिव्यक्ति प्रकाशन, वाराणसी, 1999।
6. बड़थ्वाल, पीताम्बरदत्त, गोरखबानी, राजस्थानी ग्रंथागार, 2020।
7. संपूर्णानंद, योग प्रवाह, प्रकाशक– विश्वनाथ शर्मा, मंत्री, प्रकाशन–विभाग, श्री काशी विद्यापीठ, बनारस, 1945।
8. मुक्तिबोध, मध्यकालीन भक्ति–आन्दोलन का एक पहलू, मुक्तिबोध रचनावली, खण्ड–5, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986, पृ. 294।
9. धर्मवीर, कबीर के कुछ और आलोचक, वाणी प्रकाशन, 2009, पृ. 8।
10. दास,श्यामसुंदर, कबीर ग्रंथावली, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी, सं. 2057 वि.।